आर.एन.आई. / एम पी एच आई एन 2006 / 19977
डाक पंजीयन : म.प्र. / भोपाल / 530 / 2009–2011

पूर्णांक : 156
वर्ष : 13 अंक : 12 अप्रैल 2011

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

सम्पादक
राजुरकर राज
सहायक सम्पादक : करुणा राज

सहयोग : संगीता राजुरकर

ताज़ा समाचारों के लिए
website : www.dharohar.net

वार्षिक	:	60 रुपये
त्रिवार्षिक	:	150 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

सम्पर्क
एच–3, उद्धवदास मेहता परिसर,
नेहरू नगर, भोपाल–462003
चलित वार्ता : 9425007710
सम्पादन–प्रकाशन : अवैतनिक–अव्यावसायिक

website : www.dharohar.net
e-mail : shabdashilpi@yahoo.com

आसपास इस बार

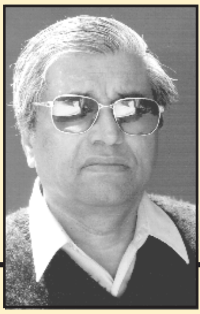

स्मृति शेष : कमला प्रसाद

संग्रहालय का
पाँच दिवसीय 'पुस्तक पर्व'

रंगकर्मी की मदद को आगे आई 'त्रिकर्षी'

मरते दम तक लिखने की ख्वाहिश : नीरज

ताज़ा समाचारों के लिए
website : www.dharohar.net

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय
एफ–50 / 17, दक्षिण तात्या टोपे नगर, शरद जोशी मार्ग, भोपाल–462003
दूरवार्ता : 0755–2775129, 9425007710, 9713818129, 9479377110

●इस सम्वाद पत्रिका के माध्यम से हम रचनाकारों में पारिवारिक आत्मीयता और रचनात्मक सक्रियता बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं. किसी के सम्मान में ठेस पहुँचाना या किसी की मानहानि हमारा लक्ष्य नहीं है. फिर भी जाने–अनजाने ऐसा हो तो हम अग्रिम खेद व्यक्त करते हैं. ●बहुत–सी सामग्री हम अन्य पत्र–पत्रिकाओं से लेते हैं, उनके प्रति हम अग्रिम कृतज्ञ हैं.●सूचनाओं की प्रामाणिकता के लिए सम्बन्धित से ही सम्पर्क करें. किसी भी तरह का दावा मान्य नहीं होगा. ●हम कोई विवाद नहीं चाहते. फिर भी हुआ, तो निपटारा भोपाल न्यायालय के अधीन.

स्मृति–शेष : कमला प्रसाद

उन्हें धोखे से ही खत्म किया जा सकता था

कुमार अम्बुज

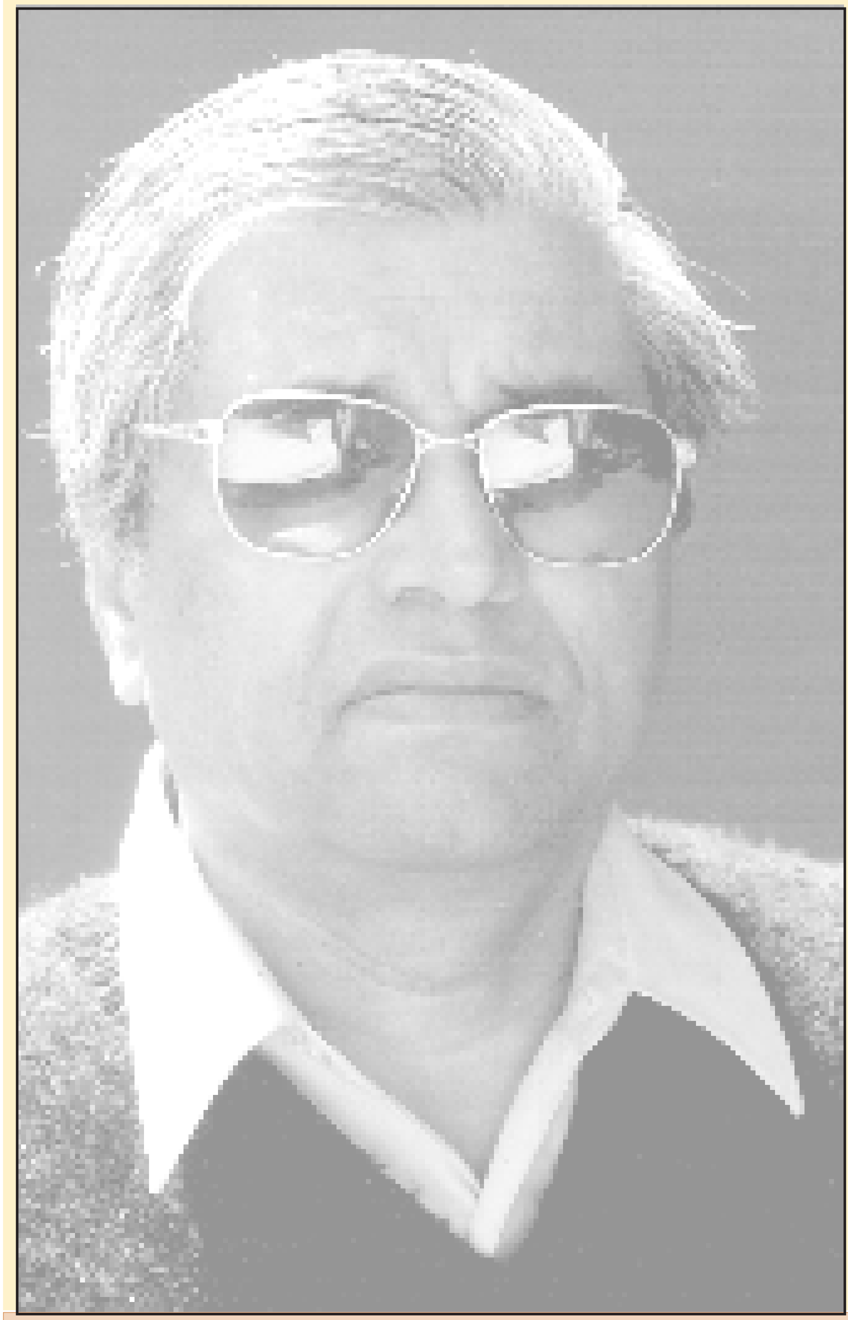

अविभाजित मध्यप्रदेश के साथ ही पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय महासचिव के दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने पूरे भारतवर्ष का दौरा किया और जगह–जगह इकाइयाँ बनाने, अचल को पुनर्जीवित करने का महती काम किया। अपने लेखन की वृहत्तर सम्भावनाओं और महत्वाकांक्षा को भी उन्होंने सांगठनिक क्रियाशीलता में खपा दिया। कहा ही जाना चाहिए कि यदि उनकी इतनी संलग्नता, सक्रियता न होती तो देश–प्रदेश में प्रलेसं की इतनी इकाइयाँ और हलचल सम्भव न होती।

हमारे समय में लेखन, विचार और संगठन की यदि कोई संघीय, गणतांत्रिक और लोकतांत्रिक उपस्थिति है तो कह सकते हैं कि उसका एक प्रमुख स्तंभ गिर गया है।

सातवें दशक से लेकर अब तक प्रगतिशील लेखक संघ के पुनर्निमाण में, उसे सक्रिय गतिशील और स्पंदित रखने में कमला प्रसाद का अतुलनीय, असंदिग्ध और अप्रतिम योगदान है। प्रलेसं के प्रति प्रतिबद्धता से विचलन का या उससे विलग होने का किंचित विचार भी उनके मन में कभी नहीं आया। अवांछित आरोपों, मुश्किलों और मोहभंग के कुछ दुर्लभ क्षणों में भी वे इस विवेक को बचाये रखते थे कि संगठन ही सर्वोपरि है। दरअसल, धीरे–धीरे वे अनेक छुद्रताओं से ऊपर हो गए थे। उन्होंने अपने काम को, प्रलेसं से अपने जुड़ाव को कभी संकुचित या सीमित नहीं होने दिया और व्यापक वामपंथी लेखकीय एकता का स्वप्न भी देखते रहे।

अविभाजित मध्यप्रदेश के साथ ही पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय महासचिव के दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने पूरे भारतवर्ष का दौरा किया और जगह–जगह इकाइयां बनाने, अचल को पुनर्जीवित करने का महती काम किया। अपने लेखन की वृहत्तर सम्भावनाओं और महत्वाकांक्षा को भी उन्होंने सांगठनिक क्रियाशीलता में खपा दिया। कहा ही जाना चाहिए कि यदि उनकी इतनी संलग्नता, सक्रियता न होती तो देश–प्रदेश में प्रलेसं की इतनी इकाइयाँ और हलचल सम्भव न होती।

यही नहीं 'वसुधा' में लिखे अनेक सम्पादकीयों, सम्मेलनों–आयोजनों में दिए गए भाषणों, व्याख्यानों से जाहिर है कि उन्होंने वामपंथी, प्रगतिशील–जनवादी विचार को जीवंत रखने का, पक्षधरता बनाये रखने का काम लगातार किया। यह वह पक्ष है जिसे कमला प्रसाद के संदर्भ में अकसर गौण किया जाता रहा है या कम महत्व दिया गया है। उनके लिखे व उच्चरित शब्दों को यदि किसी क्रमवार तरीके से संकलित किया जाए तो उनकी यह भूमिका बेहतर रेखांकित हो जायेगी। इन्हीं सब के बीच आलोचनाकर्ता को वे पूरी गम्भीरता और सैद्धांतिकी के साथ करत रहे, उनकी आलोचना संबंधी प्रकाशित पुस्तकें और समीक्षाएं इसका बेहतर साक्ष्य है। 'पहल' पत्रिका के सहयोगी रहते हुए उन वर्षों में उन्होंने काफी जमीनी काम भी किया।

इधर कमला प्रसाद कमांडर, सर, गुरूजी और आचार्य के सम्बोधनों से जाने जाते रहे यद्यपि इनमें से 'कमांडर' ही सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वमान्य हो गया था। अद्भुत सांगठनिक क्षमता, अनुशासित आयोजनधर्मिता और नेतृत्वशीलता के कारण उन्हें दिया गया यह सम्बोधन जैसे किसी बहुमत के अधीन सबको सहज ग्राह्य हो गया था।

उनका एक दुर्लभतम गुण था : आत्मीय रिश्ते बनाना, पारिवारिकता कायम करना। वे इसे मार्क्सवादी लक्षण की तरह लेते थे। कि संगठन ही विस्तारित, सच्चा परिवार है। उनके व्यवहार में यह सहजता, निश्चलता, उदारता और अपनाया था कि उनसे किसी भी रूप में सम्पर्क में आये प्रत्येक व्यक्ति को, खासतौर पर लेखक समुदाय को, यह अधिकार हो जाता था कि वह कभी भी उनके घर आ सकता है, खाना खा सकता है और संकट के समय आश्रय भी पा ही सकता है और वे भी अपने साथियों पर ऐसा अधिकार मानते थे, भले वे कभी–कभार ही इस अधिकार का उपयोग कर पाये हों। वे एक बार बन गये आत्मीय संबंधों को बहुत महत्व देते थे। लेखक

प्रो. कमलाप्रसाद नहीं रहे

भोपाल। प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव और ख्यात आलोचक प्रो. कमला प्रसाद कैंसर से जूझते हुए 25 मार्च को जिंदगी की जंग हार गए। 21 मार्च को स्वास्थ्य चिन्ताजनक होने पर उन्हें एयर–एम्बुलेंस से दिल्ली से लाया गया था। वहाँ उन्हें एम्स में भर्ती किया गया था जहाँ उन्होंने शुक्रवार 25 मार्च की सुबह लगभग साढ़े छह बजे अन्तिम सांस ली। श्री प्रसाद के पार्थिव शरीर को दिल्ली में कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालय अजय भवन पर दर्शनाथ रखा गया। इससे पहले 19 तारीख को तबीयत ज्यादा खराब होने पर उन्हें स्थानीय चिरायु अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहाँ उन्हें सेरिब्रल मलेरिया बताया गया था, जिसके कारण उनकी कीमोथेरेपी को रोकना पड़ा था।

डॉक्टर्स का कहना है कि कीमोथेरेपी रुक जाने के कारण उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा। स्वर्गीय कमलाप्रसाद का पार्थिव शरीर शुक्रवार की शाम जेट एयरवेज की फ्लाइट से भोपाल लाया गया। प्रो. कमलाप्रसाद के निधन पर मुख्यंमत्री शिवराज सिंह चौहान और संस्कृति मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने शोक व्यक्त किया है। मृदुभाषी और मिलनसार कमलाप्रसाद राज्य सरकार के संस्कृति विभाग में उपसचिव के पद पर कार्य कर चुके हैं। इसके अलावा वे आगरा के हिंदी संस्थान के निदेशक पद पर भी रह चुके हैं।

दैनिक जागरण में छपा

साथियों की व्यक्तिगत परेशानियों में खुद को हिस्सेदार बना लेते थे, कई बार तो भोक्ता से ज्यादा वे चिंतित रहते। मैंने उनकी दैनिक कार्यसूची में ऐसे अनेक काम लिखे देखे हैं जो दिल्ली, पटना, मंडी, गुवाहाटी, कालीकट, विदिशा, मुंबई, बिलासपुर, आरा, होशियारपुर या अशोकनगर में रह रहे लेखक साथियों के निजी काम थे। इस संबंध में अपने सम्पर्कों के उपयोग में कोई संकोच नहीं बरतते थे। वे इन कामों में जुट जाते और असफल रहने पर दुख मानते लेकिन सफलता का प्रचार नहीं करते थे।

इधर तो यह खूब हुआ कि नयी सामाजिक, राजनैतिक–आर्थिक और नैतिक वंचनाओं, व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं की कमी और निष्क्रियताओं से उपजी भीतरी सांगठनिक असफलताओं का ठीकरा भी कमला प्रसाद के माथे फोड़ दिया जाता। जैसे इस क्षयग्रस्त सामूहिकता के वे व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी हों। जीवन के उत्तरार्द्ध में सर्वाधिक कष्ट उन्हें इसी बात का रहा। उनकी निजी किसी चूक को भी संगठन की भूल की तरह प्रचारित किया गया। लेकिन इस तरह उनके कार्य का, उनकी महत्ता का अवमूल्यन सम्भव नहीं और मूल्यांकन तो कतई नहीं। उनका अपना प्रतिबद्ध दुःसाहस तो इस हद तक था कि गहन बीमारी में भी वे अभी एक महीने पहले प्रगतिशील लेखक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में कालीकट चले गये। उनके संपादन में 'वसुधा' पत्रिका लगातार अधिक विचारशीलता और सर्जनात्मकता की तरफ यात्रा कर रही थी।

उनके पास एक बड़े परिवार के भरण–पोषण का जिम्मा था और आर्थिक मोर्चे पर वे ऐसे सम्पन्न नहीं थे कि बेपरवाही, असजगता या अराजक अव्यावहारिकता से रहा जा सके। समृद्ध, सम्पन्न और आत्मलीन लोगों ने उनकी इस स्थिति पर भी टिप्पणियां करने से गुरेज नहीं किया। लेकिन हम देख सकते हैं कि जीवन और विचार की लड़ाइयां उन्होंने सामने से लड़ी। वे चुपचाप नहीं रहे, उन्होंने जवाब दिए, असहमतियां दर्ज कीं, हस्तक्षेप किया, अनंत मित्र बनाए और आवश्यकता लगने पर शत्रु बनाने में भी पीछे नहीं रहे। लेकिन रूठकर किसी कोने में बैठ जाना उनका स्वभाव नहीं रहा, वे हमेशा संवादी रहे। अनेक पीढ़ियों को उन्होंने वैचारिक रूप से शिक्षित किया। सर्जनात्मक रचना शिविरों को सम्भव किया। अनगिन लेखकों को प्रोत्साहन दिया। वे साथियों पर विश्वास करते थे और साथियों का विश्वास अर्जित करते थे। उन्हें सिर्फ धोखे से खत्म किया जा सकता था। कैंसर ने अपनी विषम अवस्था में यकायक प्रकट होकर, चुपचाप रक्त कोशिकाओं को घेरकर उन्हें धोखे से ही खत्म किया। निजी तौर पर उन्हें बेहद करीब से, दो महीनों में धीरे–धीरे इस तरह जाते हुए देखना एक त्रासद, अमिट, दारुण अनुभव है। दरअसल, हमने सक्रियता और ऊर्जा की दृष्टि से युवकोचित उत्साह के एक साथी को भी खो दिया है। उन्होंने एक कॉमरेड का जीवन चुना, साहित्य के क्षेत्र का वरण किया और उसी में जिये–मरे।

भोपाल में निराला नगर, जहाँ आज अनेक लेखक–पत्रकार रहते हैं, उसकी परिकल्पना और निर्माण में कमला प्रसाद की भूमिका थी, वहां जाना अब एक अशेष स्तब्धता और खालीपन को अनुभव करना है। एक की कमी भी बहुवचनीय होती है और कमला प्रसाद के प्रसंग में तो यह बहुगुणित है। 'एक तारा टूटने से भी वीरान होता है आकाश', इस पंक्ति को कमला प्रसाद के संदर्भ में याद करना औचित्यपूर्ण तो है लेकिन साथ ही एक व्यापक, असीम दुख के अंतरिक्ष में प्रवेश करना है।

जनसत्ता में छपा

पुरस्कार लेने से इनकार किया

भोपाल। वरिष्ठ आलोचक कमला प्रसाद के पुत्र परितोष पाण्डेय ने प्रमोद वर्मा संस्थान की ओर से अपने पिता को दिया जाने वाला प्रमोद वर्मा स्मृति आलोचना सम्मान लेने में असमर्थता जताई है। कमला प्रसाद का 25 मार्च को निधन हो गया और उन्हें सम्मान दिए जाने की घोषणा दो दिन पहले ही की गई थी।

श्री परितोष ने कहा है कि मेरे पिता जिन मूल्यों की लड़ाई लड़ रहे थे और उनकी जो प्रतिबद्धता थी, उसकी रोशनी में हमें यह पुरस्कार स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने आरोप लगाया है कि जिस व्यक्ति के नेतृत्व में यह संस्थान चल रहा है उसका सम्बन्ध सलवा जुडूम में सरकारी तंत्र के तहत मानवाधिकारों के हनन से है। इसके अलावा मेरे पिता क्योंकि प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर थे, इसलिए यह फैसला भी मैं और मेरा परिवार प्रगतिशील लेखक संघ के नेतृत्व पर छोड़ते हैं। प्रगतिशील लेखक संघ के सूत्रों का कहना है कि संगठन यह पुरस्कार लेने में अपनी सहमति नहीं देगा। हालांकि इस विषय में औपचारिक फैसला प्रलेस की बैठक में किया जाएगा।

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय का

पाँच दिवसीय पुस्तक पर्व

भोपाल। 'जिस समय द्वितीय महायुद्ध हो रहा था तो छोटे से कमरे में आठ–दस लोग बैठकर महायुद्ध में विजयी होने की योजना बनाते थे, और वे अपनी योजना में कामयाब भी हुए। यह संस्था भी वैसी ही है। यह आयोजन भी ठीक उसी तरह हिन्दी और सर्जनात्मकता को प्रतिष्ठित और प्रोत्साहित करने का प्रयास है। अतः इस आयोजन को छोटा न समझा जाये।' यह बात वरिष्ठ साहित्यकार एवं उत्तरप्रदेश विधानसभा के पूर्व सभापति श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के पाँच दिवसीय आयोजन पुस्तक पर्व के शुभारम्भ अवसर पर कही। यह पाँच दिवसीय पुस्तक पर्व दिल्ली के नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित था। इसके सहप्रायोजक एनएचडीसी लिमिटेड, भारतीय स्टेट बैंक, चौधरी एजेंसी और आईसेक्ट थे।

श्री त्रिपाठी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हिन्दी साहित्य अंग्रेजी साहित्य से श्रेष्ठ और इसका सबसे अच्छा उदाहरण रामचरित मानस है जो मानवीय संवेदना, सत्य और आदर्श की स्थापना के कारण हमारा पथ प्रदर्शक है। वर्तमान में लोगों की साहित्य की अपेक्षा और उदासीनता की जड़ दो प्रमुख कारण सरकारी नीतियाँ और लोगों पर बढ़ता आर्थिक दबाव है। इसके साथ ही प्रकाशकों में साहित्य अनुराग न होकर व्यसायिक भाव होने से किताबों की बढ़ती कीमतों ने उसे आम आदमी से दूर कर दिया है।

श्री त्रिपाठी ने कहा कि यह पुस्तक पर्व पाठकों के लिए सार्थक और सकारात्मक साबित होगा। उन्होंने इसके आयोजन के लिए बधाई दी और कामना की कि पांच दिनों तक चलने वाला यह पर्व अपने उद्‌देश्य को प्राप्त करें।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार श्री महेश श्रीवास्तव ने कहा कि पुस्तकों के मेले तो बहुत होते हैं परन्तु दुष्यन्त संग्रहालय द्वारा पुस्तक पर्व के नाम से किया गया यह आयोजन संग्रहालय की भावभूमि को विस्तार देता है। उन्होंने कहा कि पर्व आते हैं चले जाते हैं परन्तु पुस्तकें हमारे पूरे जीवन को पर्व बना देती है। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि संग्रहालय हमेशा ही नवाचार करता है। राजधानी में निरन्तर रचनात्मक वातावरण बनाये रखने में संग्रहालय की महत्वपूर्ण भूमिका है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में विधानसभा के प्रमुख सचिव डॉ. आनन्द पयासी ने संग्रहालय के प्रयासों की प्रशंसा की और इस पुस्तक पर्व को एक अनूठा प्रयास बताया। डॉ. पयासी ने

संग्रहालय को विरासत का संवाहक बताया। डॉ. पयासी ने इस अवसर पर अपनी चुनिन्दा रचनाओं का भी पाठ किया।

समारोह के आरम्भ में संग्रहालय के सरंक्षक श्री महेन्द्र चौधरी ने संग्रहालय का विस्तार से परिचय दिया और संग्रहालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

पुस्तक एवं कविता यात्रा

समारोह के बाद पुस्तक और कविता यात्रा भी निकाली गई, जो शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरी। इस यात्रा का संचालन वरिष्ठ गीतकार श्री ऋषि श्रृंगारी ने किया। यात्रा का मुख्य आकर्षण पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने वाले तख्तियों पर लिखे हुए नारे और जगह जगह पर कवियों द्वारा कविता पाठ था। कवियों ने चौराहों पर रुककर कवितापाठ किया जिसका राहगीरों ने खूब आनन्द लिया।

इस यात्रा का आरम्भ समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार एवं उत्तरप्रदेश विधानसभा के पूर्व सभापति श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने कविता सुनाकर किया। यात्रा के प्रस्थान बिन्दु पर श्री त्रिपाठी के साथ ही श्री महेश श्रीवास्तव एवं डॉ. आनन्द पयासी ने भी रचनापाठ किया। पुस्तक–कविता यात्रा संग्रहालय से आरम्भ होकर शरद जोशी मार्ग होती हुई प्लेटिनम प्लाज़ा, टीन शेड, तात्या टोपे स्टेडियम, न्यू मार्केट, कटसी स्टाप होते हुए वापस संग्रहालय पहुंची। यात्रा में बड़ी संख्या में कवियों और पुस्तकप्रेमियों ने भाग लिया।

कविता सुनाकर 'पुस्तक यात्रा' का आरम्भ करते हुए श्री केशरीनाथ त्रिपाठी

पुस्तक पर्व : दूसरा दिन

अलंकरण समारोह सम्पन्न

'संग्रहालय में आना मुझे हमेशा अच्छा लगता है, क्योंकि संघर्षशील व्यक्ति और संस्था मेरी रुचि का विषय है। दुष्यन्त संग्रहालय और राजुरकर राज जिस तरह निष्ठा के साथ काम करते हैं, यह प्रेरणा भी देता है।' ये विचार दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के अलंकरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सन्तोष चौबे ने व्यक्त किये। श्री चौबे ने राजेश जोशी और भगवत रावत की कविताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ये अपने समय के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। और ऐसे रचनाकारों का संग्रहालय की ओर से सम्मान करना एक अद्‍भुत अनुभव है।

समारोह की अध्यक्षता सागर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं वरिष्ठ आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा ने की। उन्होंने अपने उद्‍बोधन में कहा कि संस्थाओं की भीड़ में दुष्यन्त कुमार संग्रहालय अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। दुष्यन्त कुमार के साथ अपनी अंतरंगता को याद करते हुए डॉ. वर्मा ने कहा कि यंह संग्रहालय केवल दुष्यन्त ही नहीं, सारी रचनात्मक संस्कृति को बचाने का प्रयत्न कर रहा है।

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में आज शाम देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों को संग्रहालय के प्रतिष्ठा अलंकरणों से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सी.वी.रमन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सन्तोष चौबे थे एवं अध्यक्षता सागर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं वरिष्ठ आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा ने की।

समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार श्री राजेश जोशी को दुष्यन्त कुमार अलंकरण, प्रो. भगवत रावत एवं मालती जोशी को सुदीर्घ साधना सम्मान, श्री नरहरि पटेल को आंचलिक रचनाकार सम्मान तथा कथाकार श्री इक़बाल मजीद को अमृत साधना सम्मान से विभूषित किया गया।

अपने सम्मान के उत्तर में बोलते हुए प्रो. भगवत रावत ने कहा कि सम्मान मिलना यह गौरव की बात है और विशेषतः

तब जब दुष्यन्त के नाम पर स्थापित संग्रहालय द्वारा सम्मान दिया जा रहा हो।

श्रीमती मालती जोशी ने कहा कि ऐसी संस्थाओं द्वारा सम्मान मिलना अपनेपन का प्रतीक है। पाठकों का प्रेम ही हमें निरन्तर लिखने की प्रेरणा देता है और संग्रहालय जैसी संस्था जब सम्मानित करती है तो लगता है कि हम सचमुच कुछ बेहतर लिख पा रहे हैं।

श्री नरहरि पटेल ने कहा कि दुष्यन्त कुमार ने हिन्दी में ग़ज़ल की शुरुआत की और उन्हीं की प्रेरणा से मैंने भी मालवी में ग़ज़ल लिखने का प्रयत्न किया है।

राजेश जोशी ने कहा कि अपने ही घर में सम्मानित होना बड़ा रोमांचकारी है। दुष्यन्त कुमार जी के नाम पर अलंकृत होना बड़ा संयोग भी है और सौभाग्य भी। दुष्यन्त जी के साथ संस्मरणों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वे बड़े कद के रचनाकार थे।

श्री इक़बाल मजीद ने अपने सम्मान के उत्तर में बोलते हुए कहा कि दुष्यन्त कुमार स्मारक संग्रहालयं सचमुच में बेहतर काम कर रहा है। जिस तरह की धरोहर संग्रहालय ने सहेजी है, वह अनमोल है। और संग्रहालय की सम्मान की परम्परा बहुत समृद्ध है। इस संस्था से सम्मानित होना आत्मीयता का बोध कराता है।

आरम्भ में श्री नरेन्द्र दीपक ने स्वागत वक्तव्य दिया। आभार संग्रहालय के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर ने व्यक्त किया।

पुस्तक पर्व : तीसरा दिन
संगोष्ठी : 'पुस्तक की ज़रूरत'

पुस्तक ही मनुष्य को पशुत्व से मुक्त कराती है

भोपाल। 'ज्ञान मोक्ष का आधार है, और पुस्तक ज्ञान का भण्डार है। पुस्तक हमारे अन्तरंग की साथी है, हमारी अभिन्न मित्र होती है। पुस्तक साधना का प्रतिफल है। पुस्तक ही मनुष्य को पशुत्व से मुक्त करती है और सद्मार्ग का दर्शन कराती है। पाठक ही पुस्तकों का चयन नहीं करता, वरन पुस्तकें भी पाठक का चयन करती है।'—ये उद्गार दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में 'पुस्तक पर्व' के तीसरे दिन 'पुस्तक की ज़रूरत' विषय पर संगोष्ठी में युवा रचनाकार श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि ने व्यक्त किये।

अलंकरण

सर्वश्री राजेश जोशी,
नरहरि पटेल,
प्रो. भगवत रावत,
डॉ. धनंजय वर्मा,
सन्तोष चौबे,
इकबाल मजीद
एवं श्रीमती मालती जोशी.

'पुस्तक की ज़रूरत' विषय पर संगोष्ठी में डॉ. विजय अग्रवाल। मंच पर सर्वश्री मधुकर द्विवेदी, लक्ष्मीनारायण पयोधि एवं मुकेश वर्मा।

संगोष्ठी में वरिष्ठ पत्रकार श्री मधुकर द्विवेदी ने कहा कि शब्द ब्रम्ह का स्वरूप होता है और पुस्तक शब्दों के माध्यम से ज्ञान का संचय है। यदि पुस्तकें न होती तो हमारी परम्परा का ज्ञान हम तक न आ पाता।

समय प्रबन्धन विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ लेखक डॉ. विजय अग्रवाल ने पुस्तकों का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि जहाँ पुस्तकों की दुकानें हैं, वहाँ दवाई की दुकानें कम होंगी। उन्होंने कहा कि सामान्य तौर पर व्यक्ति केवल अपना जीवन जीता है, लेकिन पुस्तक के जरिये हम अनेक लोगों का जीवन जी पाते हैं। डॉ. अग्रवाल ने कहा कि पुस्तकों के माध्यम से हमें अपनी जघें का पता चलता है।

वरिष्ठ कथाकार श्री मुकेश वर्मा ने पुस्तक की ज़रूरत को लेकर अनेक सवाल भी खड़े किये। उन्होंने कहा कि पुस्तक की ज़रूरत तभी है, जब उसका सम्मान हो। उन्होंने कहा कि इस समय सबसे ज्यादा लड़ाई तो किताबों ने ही करवाई है। किताबों ने ही वर्णभेद और वर्गभेद किया है। स्त्री विमर्श के नाम पर उन्हें पुरुषों के विरुद्ध खड़ा करवा रही हैं। फिर पुस्तक की ज़रूरत क्या है। श्री वर्मा ने ज्वलन्त प्रश्न सामने रखते हुए अपने वक्तव्य का समापन किया।

आरम्भ में पुस्तक पर्व की पृष्ठभूमि पर निदेशक राजुरकर राज ने प्रकाश डाला। स्वागत वक्तव्य श्री शिकुमार अर्चन ने दिया एवं संग्रहालय की ओर से श्री नरेन्द्र दीपक ने आभार व्यक्त किया।

पुस्तक पर्व : चौथा दिन
सोम ठाकुर दुष्यन्त अलंकरण से सम्मानित

भोपाल। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में 'पुस्तक पर्व' के चौथे दिन देश के वरिष्ठ गीतकार श्री सोम ठाकुर को 2009 के 'दुष्यन्त कुमार अलंकरण' से अलंकृत किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि एनएचडीसी लिमिटेड के मुख्य कार्यपालक निदेशक श्री के.एम. सिंह थे। अध्यक्षता संग्रहालय के संरक्षक श्री महेन्द्र चौधरी ने की।

श्री सोम ठाकुर ने अपने सम्मान के उत्तर में कहा कि दुष्यन्त कुमार संग्रहालय देश में अपनी गौरवशाली पहचान बना चुका है। जहाँ कुछ शासकीय संस्थान अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हैं, वहीं संग्रहालय की निरन्तरता हमें बेहतर भविष्य के प्रति आश्वस्त कराती है।

मुख्य अतिथि श्री के.एम. सिंह ने कहा कि एनएचडीसी

कवि सम्मेलन

श्री अशोक निर्मल
श्री नरेन्द्र दीपक
श्री शिवकुमार अर्चन
श्री सोम ठाकुर
डॉ. नुसरम मेहदी

लिमिटेड हमेशा सर्जनात्मकता को बढ़ावा देता आया है। संग्रहालय में निरन्तर गतिविधियाँ हमें भी प्रेरित करती हैं कि हम ऐसी संस्थाओं का साथ दें। उन्होंने कहा कि श्री सोम ठाकुर को अलंकृत करना गीत की परम्परा को अलंकृत करना है।

समारोह के दूसरे चरण में कवि सम्मेलन हुआ, जिसमें सर्वश्री सोम ठाकुर, नरेन्द्र दीपक, शिवकुमार अर्चन, अशोक निर्मल एवं श्रीमती नुसरत मेहदी ने अपनी रचनाओं से आनन्दित किया। कवि सम्मेलन का आरम्भ श्री अशोक निर्मल ने फागुन गीत से किया। 'कली को चिट्ठियों के साथ भौंरे भेजते सौगात, फागुन आ गया है।' शिवकुमार अर्चन ने गीत और ग़ज़ल के साथ ही फागुनी दोहे सुनाये–'सड़क गली अमराई के थिरकन लागे पांव, दूर देश से लौट के फागुन आया गांव।'

श्रीमती नुसरत मेहदी की ग़ज़लों को सभी ने सराहा। उन्होंने शेर पढ़े–'कतरा के ज़िन्दगी से गुज़र जाऊं क्या करुं, रुसवाइयों के खौफ से मर जाऊं क्या करुं'।

अलंकृत रचनाकार श्री सोम ठाकुर को श्रोताओं ने देर रात तक पूरे मन से सुना। श्री सोम ठाकुर ने 'कल्प वृक्षों के सुनहले फूल हैं ये, दर्द की आकाशवाणी के वचन हैं' से आरम्भ कर अपने बहुत चर्चित गीत भी सुनाये।

पुस्तक पर्व : पाँचवाँ दिन
पाँच दिवसीय पुस्तक पर्व का समापन

पुस्तक पर्व में बिकी लगभग साढ़े तीन लाख रुपये की पुस्तकें

नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय का 'पुस्तक पर्व' प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि सागर ग्रुप के चेयरमेन इंजीनियर संजीव अग्रवाल थे एवं अध्यक्षता संग्रहालय के संरक्षक श्री केशव जैन ने की।

संग्रहालय के निदेशक राजुरकर राज ने बताया कि इस पुस्तक पर्व में लगभग तीस प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं के स्टॉल्स लगे, जिन पर नौ हजार पुस्तकें रखी गईं। यहाँ साहित्य, कला, विज्ञान, धर्म और अध्यात्म आदि की पुस्तकों का पुस्तक प्रेमियों ने न केवल अवलोकन किया, बल्कि पुस्तकें खरीदकर पुस्तक पर्व का लाभ भी लिया। करवट कला परिषद की भोपाल दीर्घा विशेष आकर्षण रही, जहाँ भोपाल के साहित्यकारों की पाँच सौ से अधिक पुस्तकें अवलोकन के लिए प्रदर्शित की गई थीं। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के स्टॉल पर साहित्यकारों की डायरेक्ट्री ने साहित्यकारों को आकर्षित किया, जिसमें देश भर के पन्द्रह हजार से अधिक साहित्यकारों के पते शामिल हैं।

सोम ठाकुर को दुष्यन्त कुमार अलंकरण
बाँये से– राजुरकर राज, श्री सोम ठाकुर, श्री के.एम. सिंह, श्री महेन्द्र चौधरी एवं श्री एनलाल जैन 'स्वदेशी'

प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी के उर्दू–हिन्दी शब्दकोश, बरकतउल्ला भोपाली पर केन्द्रित पुस्तक, और इकबाल की शायरी को पाठकों का अच्छा प्रतिसाद मिला। वहीं साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका 'साक्षात्कार' ने सर्जनात्मक उपस्थिति दर्ज करवाई। यहाँ मालवी और निमाड़ी साहित्य का इतिहास विशेष उल्लेखनीय था। सहयोग पुस्तक कुटीर ने सामाजिक क्रान्ति पर केन्द्रित पुस्तकों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया, जिसमें एक और भूमकाल, किसान की ललकार, किसान की गरीबी का राज आदि प्रमुख है। निर्दलीय प्रकाशन की आदमी के गीत, प्रापर्टी खरीदने से पहले सावधानियाँ, गाँव गाँव से पाँव पाँव महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। राज्य संसाधन केन्द्र ने बच्चों और बड़ों के लिए भी पुस्तकें उपलब्ध करवाई, जिनमें पर्यावरण, विज्ञान एवं कहानियों की पुस्तकों ने पाठकों का ध्यान खींचा। वहाँ प्रेमचन्द के साहित्य से लेकर मोबाइल आदि पर भी पुस्तकें हैं। आईसेक्ट पब्लिकेशन ने जहाँ विज्ञान और कम्प्यूटर की पुस्तकों को हिन्दी में उपलब्ध करवाया, वहीं 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' जैसी महत्वपूर्ण पत्रिका को भी सराहा गया।

निदेशक राजुरकर राज ने बताया कि एक मोटे अनुमान के आधार पर पाँच दिनों में लगभग साढ़े तीन लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई। साथ ही कई पाठक मासिक पत्रिकाओं के सदस्य भी बने।

मुख्य अतिथि इंजीनियर श्री संजीव अग्रवाल ने कहा कि संग्रहालय निरन्तर समाजोन्मुखी कार्य करता है। यह पुस्तक पर्व भी अपनी तरह का अविस्मरणीय आयोजन है। संग्रहालय से जुड़ना मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री केशवचन्द्र जैन ने कहा कि यह संग्रहालय सारे देश में अपनी पहचान बना चुका है। इसका पुस्तक पर्व अगले वर्ष से और विस्तार पा सकेगा, ऐसा विश्वास है।

संग्रहालय की प्रबन्ध परिषद के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर ने पुस्तक पर्व के समापन की घोषणा की एवं संयोजक डॉ. बाबूराव गुजरे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

●●●

मरते दम तक लिखने की ख्वाहिश : नीरज

लखनऊ। प्रख्यात गीतकार गोपालदास नीरज का फिल्मी सफर भले ही सिर्फ पांच साल का रहा हो लेकिन मरते दम तक लिखने के ख्वाहिशमंद इस अदीब को इस अवधि में लिखे हुए कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे और जीवन की बगिया महकेगी जैसे अमर गीतों के लिए आज भी रायल्टी मिल रही है। 87वां जन्मदिन मनाने वाले नीरज इन दिनों देवानंद जैसे गिने चुने दोस्तों के लिए इक्का–दुक्का गीत ही लिखते हैं। देवानंद ने हाल में अपनी फिल्म 'चार्जशीट' के लिए उनसे सूफी गीत लिखवाया था।

इस उम्र में भी बेहतरीन कृतियां रचने के अभिलाषी नीरज ने कहा–कुछ और लोग भी हैं, जिनके लिए लिखता हूं। फिलहाल मुझे उनके नाम याद नहीं हैं। 2007 में पद्मभूषण से सम्मानित नीरज आज भी कवि सम्मेलनों की जान हैं और उनकी रचनाएं पिछले 70 साल से सुनने वालों को लुभा रही हैं। पहचान की ख्वाहिश से अछूते इस गीतकार का यह सफर जारी है और उनकी चाहत है कि वे जब तक जिंदा रहें, अदब की खिदमत करते रहें।

मरते दम तक तहेदिल से लिखने की इच्छा जताते हुए नीरज ने कहा कि अगर दुनिया से रुखसती के वक्त आपके गीत और कविताएं लोगों की जबान और दिल में हों, तो यही आपकी सबसे बड़ी पहचान होगी। इसकी ख्वाहिश हर फनकार को होती है। नीरज ने कहा कि शायद सचिनदेव बर्मन और संगीतकार जोड़ी शंकर–जयकिशन के शंकर जैसे मौसीकीकारों के निधन की वजह से उनका फिल्मी सफर बहुत छोटा रह गया।

हिंदी कवियों की नई पौध के लिए आदर्श बन चुके नीरज के आदर्श प्रख्यात कवि हरिवंश राय बच्चन हैं। बच्चन से जुड़ा एक किस्सा बयान करते हुए नीरज ने कहा कि उस वक्त मेरी उम्र करीब 17 बरस रही होगी। हम लोग बांदा में एक कवि सम्मेलन में शिरकत के लिए बस से जा रहे थे। बस खचाखच भरी थी और मुझे सीट नहीं मिली थी। उस वक्त बच्चन जी ने मुझे अपनी गोद में बैठने को कहा था। मैं बहुत खुशकिस्मत हूं कि मुझे उनसे इतना स्नेह मिला। कवि सम्मेलनों में अब भी सक्रिय नीरज मौजूद दौर के हिंदी कवियों से संतुष्ट हैं। उनका कहना है कि नई पीढ़ी के कवि सभी विषयों पर प्रभावी रचनाए कर रहे हैं।

जनसत्ता में छपा

आप अपनी सदस्यता के बारे में स्वयं जान सकते हैं। आपके पते में सबसे उपर एक संख्या लिखी है। उसकी पहली संख्या सदस्यता कमांक है, दूसरी संख्या सदस्यता का माह और तीसरी संख्या सदस्यता का सन। उदाहरण के तौर पर यदि '148/07/08–10' लिखा है तो अर्थ है कि सदस्यता कमांक 148 है। जुलाई माह में सदस्यता ली थी और सदस्यता का प्रारम्भ वर्ष 2008 था समाप्ति का वर्ष '2010' है।

शब्दशिल्पियों के **आसपास**

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

नवीनतम समाचारों के लिए देखें

www.dharohar.net

वार्षिक	:	60 रु.
त्रैवार्षिक	:	150 रु.
आजीवन	:	1000 रु.

●आजीवन सदस्य बनने पर 'शब्दसाधक' उपहार दिया जायेगा.

●500 रुपये मूल्य के 'शब्द साधक' में देश भर के पन्द्रह हजार से अधिक साहित्यकारों के नाम, पते, दूरभाष आदि की जानकारी है। कुछ साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय भी है।

●यह आपके लिए भी उपयोगी है और मित्रों को उपहार देने के लिए भी।

आज ही भेजिये मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट ^'kCnf'kfYi;ksa ds **आसपास**' के नाम.

मनीआर्डर भेजने के बाद पत्र अवश्य लिखें क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक मनीआर्डर में कोई सन्देश नहीं होता.

सम्पर्क

एच–3, उद्धवदास मेहता परिसर, नेहरू नगर, भोपाल–462003 चलित वार्ता : 9425007710

सम्मान/पुरस्कार

देवीशंकर अवस्थी सम्मान संजीव कुमार को

नई दिल्ली। इस बार का देवीशंकर अवस्थी सम्मान डॉ. संजीव कुमार को उनकी पुस्तक 'जैनेन्द्र और अज्ञेय' पर दिया जाएगा। स्वर्गीय समकालीन हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जाता है। पुरस्कार समिति में कृष्णा सोबती, विश्वनाथ त्रिपाठी, चंद्रकांत देवताले, अशोक वाजपेयी और मंगलेश डबराल शामिल थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कालेज के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर पद पर कार्यरत संजीव ने अपनी पुस्तक में जैनेन्द्र और अज्ञेय के बारे में हिंदी की अकादेमिक आलोचना में व्याप्त गलतफहमियों का सप्रमाण प्रत्याख्यान किया है। समिति की संयोजिका कमलेश अवस्थी के मुताबिक संजीव कुमार को यह सम्मान पांच अप्रैल की शाम यहां साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित समारोह में दिया जाएगा।

डॉ. अंजुम बाराबंकवी का सम्मान

भोपाल। कलमकार परिषद द्वारा कवि सम्मेलन व मुशायरे का आयोजन किया गया। इस मौके पर डॉ. अंजुम बाराबंकवी को उ.प्र. अकादमी द्वारा पुरस्कृत किए जाने के उपलक्ष्य में सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक पीसी शर्मा व विशिष्ट अतिथि डॉ. ज्ञानेन्द्र गौतम थे। अध्यक्षता डॉ. अली अब्बास ने की। संचालन काजिम रजा राही ने किया।

गिरधर राठी का बिहारी पुरस्कार

नई दिल्ली। वरिष्ठ कवि गिरधारी राठी को उनके कविता संग्रह 'अंत के संशय' के लिए वर्ष 2010 का बिहारी पुरस्कार दिया जाएगा। केके बिरला फाउंडेशन की ओर से वर्ष 1991 में शुरू किया गया बिहारी पुरस्कार सिर्फ राजस्थान के लेखकों को दिया जाता है, जो मूल रूप से राजस्थान के हों और कहीं भी रहते हों या दूसरे भारतीय लेखक जो सात साल से राजस्थान में रहे हों। पुरस्कार की परिधि में हिंदी व राजस्थानी दोनों भाषाओं की कृतियां आती हैं। पुरस्कार के लिए उपयुक्त पात्र का चुनाव एक चुनाव परिषद करती है। फिलहाल इस परिषद के प्रमुख प्रो. नंद किशोर आचार्य हैं। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए की ध नराशि और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

डॉ. जयदेव तनेजा पुरस्कृत

हिंदी रंगमंच के बहुचर्चित, उल्लेखनीय एवं समर्पित समीक्षक डॉ. जयदेव तनेजा को वर्ष 2010 का संगीत नाट्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। पुरस्कारस्वरूप एक लाख रुपए की राशि, ताम्रपत्र एवं अंगवस्त्रम प्रदान किया जाएगा। डॉ. जयदेव तनेजा दिल्ली विश्वविद्यालय के पहले प्राध्यापक हैं, जिन्हें नाट्य समीक्षा एवं थियेटर के लिए संगीत नाट्य अकादमी का यह सम्मान दिया गया है।

युवा कविता सम्मान के लिए प्रविष्टियां

रायपुर । राज्य की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संगठन प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान अब देश की समकालीन युवा कविता को प्रोत्साहित करने के लिए एक और राष्ट्रीय सम्मान देगा । संस्थान द्वारा लिये गये निर्णायानुसार वर्ष 2010 से प्रत्येक वर्ष 40 वर्ष की आयु के कम उम्र के एक ऐसे युवा कवि को राष्ट्रीय स्तर पर प्रमोद वर्मा कविता सम्मान दिया जायेगा जिसने वर्ष भर की प्रकाशित हिन्दी कविताओं में अपने नवाचारी प्रयोग से हिन्दी कविता संसार को नयी दृष्टि देने का अनूठा प्रयास किया हो साथ ही जनतांत्रिक मूल्यों के विकास, सामाजिक सरोकारों और मानव के सम्मुख भावी चुनौतियों को समझने की नयी भाषा और प्रभावकारी शिल्प रचा हो।

चयनित युवा कवि को एक आत्मीय और राष्ट्रीय आयोजन में 5001 रुपये का नगद पुरस्कार, प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति चिन्ह, प्रमोद वर्मा समग्र, शॉल–श्रीफल से अभिनंदित किया जायेगा । इसके अलावा उसकी किसी काव्य–कृति के पाण्डुलिपि का प्रकाशन भी संस्थान के पूर्ण सहयोग से किया जायेगा । जिसकी 100 प्रतियाँ सम्मानित कवि को भेंट किया जायेगा । यह सम्मान इस वर्ष 23–24 जुलाई 2011 को संस्थान के वार्षिक और राष्ट्रीय आयोजन में दिया जायेगा ।

ऐसे युवा कवि के नाम की प्राथमिक अनुशंसा सहृदय पाठक, मित्र कवि, साहित्य–अध्यापक, आलोचक, समीक्षक, पत्र–पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य, पुस्तक प्रकाशक अपनी टिप्पणी, कवि की बायोडेटा (यदि संग्रह प्रकाशित हुआ हो तो उसकी 3 प्रतियाँ के साथ–) चयन समिति के संयोजक को प्रेषित कर सकते हैं । स्वयं कवि भी आत्मीय भाव से पहल करते हुए भी अपनी प्रविष्टि संयोजक को भेज सकते हैं । प्रविष्टि भेजते वक्त इस बात का अवश्य ध्यान रखा जाये कि कवि की कविताएँ या कविता संग्रह वर्ष 1 जनवरी 2010 से 31 दिसंबर 2010 के मध्य प्रकाशित हुए हों । प्रविष्टि प्राप्ति की अंतिम तिथि 15 जून, 2011 है एवं प्रविष्टि भेजने का पता है–' संयोजक, प्रमोद वर्मा कविता सम्मान चयन समिति, एफ–3, छ.ग.मा.शि.मं. आवासीय परिसर, दयानंद उप डाकघर के पास, पेंशनवाड़ा, रायपुर, छत्तीसगढ़–492001, मो.–94241–82664' ।

ई–मेल से प्राप्त विज्ञप्ति

वार्षिकोत्सव में सम्मान

भोपाल। बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द का तृतीय वार्षिकोत्सव 14 मार्च 2011 को संस्कृति मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा के मुख्य आथित्य में आयोजित हुआ। अध्यक्षता मंत्री श्री रामकृष्ण कुसमारिया ने की तथा विशिष्ट अतिथि मेघराज जैन, सुश्री सुशीला खन्ना, श्री रमेश शर्मा थे।

सम्मानित होने वाले बाल साहित्यकार – डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी (शाहजहाँपुर), डॉ. राष्ट्रबन्धु (कानपुर), श्रीमती सुकीर्ति भटनागर (पटियाला), श्री हरिकृष्ण तैलंग (भोपाल), श्री ललितनारायण उपध्याय (खण्डवा), श्रीमती आशा शर्मा(भोपाल), श्रीमती विमला भंडारी (सलूम्बर, राजस्थान), श्रीमती निर्मलासिंह उ.प्र.(बरेली), डॉ. राजकिशोर सक्सेना'राज' (खटीमा, उत्तरांचल), राकेश चक्र (मुरादाबाद), श्री संतोष बादल (नागपुर), डॉ. राज गोस्वामी (दतिया), श्री रामशंकर 'चंचल' (झाबुआ), श्री रमेशचन्द्र पंत (अलमोड़ा)। इसके साथ बाल पत्रिकाओं 'बच्चों का देश' एवं 'बाल पत्रिका' जयपुर को भी सम्मानित किया गया।

समारोह में बाल प्रतिभा सम्मान से कु. नित्या शुक्ला, उमा शुक्ला, आशा शर्मा, मुस्कान अग्रवाल एवं शोभित अग्रवाल को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जय जय राम आनंद की चांद सितारों में आनंद, धूल भरे हीरे आनंद, सीताराम गुप्त की सूरज के बेटे हैं हम, श्रीमती आशा शर्मा की उठो बहादुर वीर सपूतों, ऊँचे शिखर पर जाना है, नया बुधवार, श्रीमती श्यामा गुप्ता 'दर्शना' की मुर्गा बोला कुकडूं कूं, अशोक सक्सेना' अनुज की बढ़ना जो हो आगे तो, श्रीमती साधना श्रीवास्तव की बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक, श्रीमती आशा चौरसिया की नन्हे मुन्ने प्यारे बच्चे, श्रीमती प्रीति प्रवीण खरे की खेल खेल में एवं अरविन्द शर्मा की तुम सिर्फ तुम हो का लोकार्पण किया गया।

बालसाहित्यकार श्रीमती विमला भंडारी को बाल साहित्य के क्षेत्र में उनकी उल्लेनीय सेवाओं हेतु इस वर्ष का पुष्पारानी बोस विशेष पुरस्कारसे नवाजा गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें 1100 रूपये की नकद राशि, प्रमाणपत्र, श्रीफल, पुष्पगुच्छ एवं शॉल से सम्मानित किया गया। उन्होने शोध केन्द्र को अपनी बाल साहित्य की पुस्तके भेंट की।

आचार्य पर केन्द्रित 'साहित्य सागर'

भोपाल। दर्शन, साहित्य और संस्कृति पर केन्द्रित लेखन का समाज में अभाव हो रहा है, ऐसे समय में रामवल्लभ आचार्य का लेखन समाज को सही दिशा दे रहा है।

यह बात मप्र हिन्दी साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने मासिक पत्रिका साहित्य सागर के रामवल्लभ आचार्य पर केन्द्रित अंक का विमोचन करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कही। हिंदी भवन में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. मूलाराम जोशी ने कहा कि आचार्य की पदवी प्राप्त करना कठिन कार्य है और रामवल्लभ को कवि समाज ने आचार्य मान लिया है। कला मंदिर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में कुंवर किशोर टंडन, सतीश चतुर्वेदी, यतीन्द्रनाथ राही मौजूद थे।

प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान

नई दिल्ली। वर्ष 2010–11 का प्रमोद वर्मा स्मृति आलोचना सम्मान वरिष्ठ आलोचक कमला प्रसाद को दिया जाएगा। प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान की ओर से जारी बयान के मुताबिक संस्थान की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर आलोचना के लिए दिया जाने वाला यह तीसरा सम्मान इस बार वरिष्ठ आलोचक कमला प्रसाद को दिए जाने का निर्णय किया गया है। कमला प्रसाद आधुनिक हिंदी की प्रगतिशील परम्परा के महत्वपूर्ण आलोचक हैं। यह सम्मान उन्हें 14–15 मई को भिलाई में फैज अहमद फैज और केदारनाथ अग्रवाल पर होने वाले राष्ट्रीय विमर्श के अवसर पर दिया जाएगा। सम्मान के तहत 21 हजार रुपए की राशि, प्रतीक चिन्ह, शाल, श्रीफल और प्रमोद वर्मा समग्र भेंट किया जाता है। इस पुरस्कार की चयन समिति में केदारनाथ सिंह, गंगा प्रसाद विमल, धनंजय वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और संस्थान के अध्यक्ष विश्वरंजन और संयोजक जयप्रकाश मानस थे।

सतपुड़ा समय

प्रबन्ध सम्पादक
बाबूलाल मंडलोई

सम्पादक
हनुमन्त मनगटे

सम्पादकीय कार्यालय
38, विवेकानन्द मार्ग, छिन्दवाड़ा–480551

सईद मिर्जा बने नए अध्यक्ष

नई दिल्ली। सरकार ने पुणे के भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान की सोसायटी का तीन साल के लिए पुनर्गठन किया है। मशहूर फिल्मकार सईद मिर्जा इसकी संचालन परिषद के नए अध्यक्ष होंगे।

एक सरकारी बयान के मुताबिक फिल्म, पत्रकारिता, साहित्य, ललित कला, नाटक और शिक्षा से जुड़ी मशहूर हस्तियों को भी सोसायटी में सदस्य के तौर पर शामिल किया गया है। इनमें रंगकर्मी रतन थियम, टीवी अभिनेत्री रमा विज, मशहूर संतूर वादक शिव कुमार शर्मा, वृतचित्र निदेशक राजीव मेहरोत्रा, पत्रकार शाजी जमा, फोटोग्राफर और इतिहासकार बिनोय के. बहल और शिक्षाविद किरण सेठ शामिल हैं। एफटीआईआई के चार पूर्व छात्रों को भी सदस्य के तौर पर सोसायटी में जगह दी गई है। इनमें मशहूर निर्देशक राजकुमार हिरानी, अभिनेत्री जरीना वहाब, अभिनेता रजा मुराद और सुभाष चंद्र साहू शामिल हैं।

इनके अलावा सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संयुक्त सचिव (फिल्म), वित्तीय सलाहकार और अतिरिक्त सचिव, प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी अधिकारी या उनके मनोनीत अधिकारी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक, मुंबई फिल्मस् डिवीजन के मुख्य निर्माता, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के प्रबंध निदेशक, केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के अध्यक्ष, भारतीय जनसंचार संस्थान के निदेशक, राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के निदेशक, पुणे फिल्म और टेलीविजन संस्थान के निदेशक और कोलकाता स्थित सत्यजीत रे फिल्म और टेलीविजन संस्थान के निदेशक भी इसमें सदस्य के तौर पर शामिल होंगे। साथ ही संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव, संगीत नाटक अकादेमी की अध्यक्ष और दूरदर्शन के महानिदेशक को भी केन्द्र सरकार की गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करने वाले विशेषज्ञों की श्रेणी में समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है।

बात समन्दर से

कविता संग्रह

अंजना मिश्र

अंजना मिश्र की कविताएँ एक संवाद हैं। वृहद आइने के सामने बैठे किसी व्यक्ति का नहीं, वरन् किसी आत्मा का स्वयं से संवाद, एक लम्बा संवाद। उस संवाद में है खुद को देखने, जानने, समझने एवं व्यक्त करने का प्रयास।

जगदीश तोमर

अनुभव प्रकाशन

ई–8, लाजपत नगर, साहिबाबाद,
गाजियाबाद–5

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

'शब्दशिल्पियों के आसपास' का प्रकाशन माह में एक ही बार होता है, लेकिन इस बीच किसी महत्वपूर्ण घटना या गतिविधि की सूचना से अब आप वंचित नहीं रहेंगे। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय की वेबसाइट www.dharohar.net से आप ताज़ा समाचारों की जानकारी ले सकते हैं। हालांकि अभी भी इस वेबसाइट का काम चल रहा है, फिर भी आपको ताज़ा समाचार और भोपाल में होने वाले आयोजनों के बारे में जानकारी मिल जायेगी।

इसके 'निर्देशिका' में आप अपना नाम, पता और परिचय दर्ज कर सकते हैं। नाम प्रविष्ट करने के तत्काल बाद तो आप उसे नहीं देख सकेंगे, लेकिन एक–दो दिनों बाद ही आपको देखने मिल जायेगा। इसमें आप अपना चित्र भी दे सकते हैं।

यदि आप किसी पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं या आपकी कोई पसन्दीदा पत्रिका है, तो 'पत्रिका कोष' में उसकी जानकारी दे सकते हैं। किसी भी तरह की सूचना अथवा अपनी राय आप हमें दे सकते हैं। आपको हिन्दी टाइपिंग आना ज़रूरी नहीं है। आप अंग्रेज़ी में bhopal टाइप करने के बाद स्पेस बार दबायेंगे तो वह 'भोपाल' में स्वतः बदल जायेगा। आप हमें अपनी सूचनाएं ई–मेल shabdashilpi@ yahoo.com के ज़रिये भी दे सकते हैं।

अपील

लेखकों ने की कवयित्री प्रेमलता वर्मा के इलाज के लिए मदद की अपील

नई दिल्ली। पिछले कई दशकों से अर्जेंटीना में निवास कर रहीं सुपरिचित कवयित्री प्रेमलता वर्मा कुछ महीनों से गंभीर रूप से बीमार हैं। वे फॉलिक्यूलर लिंफोमा नाम के कैंसर से पीड़ित हैं, जो रक्त में फैल सकता है। अर्जेंटीना की राजधानी बोईनोस आइरेस के एक अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। उनके इलाज व सेहत के लिए साहित्य बिरादरी ने आर्थिक मदद की अपील की है। अपील करने वालों में कुंवर नारायण, राजेन्द्र यादव, अशोक वाजपेयी, मैनेजर पांडेय, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल, पंकज बिष्ट, अनामिका, वीरेन डंगवाल आदि शामिल हैं।

अपील के मुताबिक सालों से अकेली रह रहीं प्रेमलता वर्मा की माली हालत ऐसी नहीं है कि वे इलाज का खर्चा उठा सकें। वे अर्जेंटीना में हिंदी पढ़ाकर और लेखन–अनुवाद के जरिए ही गुजर करती रही हैं। उन्हें विदेश में हिंदी की सेवा के लिए केन्द्रीय हिंदी संस्थान का पुरस्कार राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील के हाथों वर्ष 2007 में दिल्ली में प्रदान किया गया था। प्रेमलता स्पेनिश और हिंदी भाषा के बीच सम्पर्क पुल के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने स्पेनिश शब्दकोश भी तैयार किया है। फिलहाल उनके कुछ अर्जेंटीनी छात्रों व शुभचिंतकों ने धन जुटाकर उनका इलाज शुरू करवाया है।

अपील में कहा गया है कि प्रेमलता वर्मा के लिए मदद उनके नाम क्रास्ड चेक या ड्राफ्ट से **98, कला विहार, मयूर विहार फेज–, दिल्ली–91** के पते पर भेजी जा सकती है। इस तरह कुल जमा राशि उनके खाते में जमा करवा दी जाएगी।

जनसत्ता में ऐसा छपा

मनोहर बाथम का कविता संग्रह

सरहद से

मूल्य 100 रुपये

मनोहरलाल बाथम

दीर्घआयु

हाईटेक होम्योपैथिक क्लीनिक

डॉ. देवेश कुमार वास्त्री
बी.एस.सी.बी.एच.एस.,सी.एस.डी(मुम्बई) एवं
डिप्लोमा सुजोक (एक्युप्रेशर एवं एक्युपंचर) मास्को

डॉ. हेमलता वास्त्री
बी.एस.सी.,बी.एच.एम.एस.
सी.जी.ओ (मुम्बई) स्त्री रोग

विशेष योग्यता

- पथरी सभी प्रकार की
- प्रोस्टेट, मूत्ररोग, शूगर
- मासिक संबंधी रोग (अनियमित, Amenorrhoea, Dysmanorrhoea) सफेद पानी (ल्युकोरिया)
- त्वचा संबंधी रोग (मुहासे, एक्जीमा, खुजली)
- यौन/गुप्त रोग
- अस्थमा, एलर्जी, साइनस
- सभी प्रकार की गठानें (स्तन, गर्भाशय)
- पाइल्स, फिशर
- बालों का झड़ना
- सफेद दाग (ल्युकोडरमा, Vitlllgo)
- बच्चों के रोग (भूख न लगना, पेट में कृमि, चिड़चिड़ापन)

समय :– 9:30 से 1 बजे तक
सायं–6 से 9 तक (रविवार 9:30 से 2)

नोट : स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने का समय अवश्य लेंवे।

क्लीनिक–शॉप नं. 16, कौरव समाज भवन,
सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल

प्रेरक पहल

दोस्त रिज़वान....आपकी बेटियाँ जरूर पढ़ेंगी..

शहर के रंगकर्मी सैयद रिज़वान अली के परिवार की मदद का जिम्मा उठाया त्रिकर्षि संस्था ने

सौरभ पंडित

राजधानी को हमेशा से ही कला और कलाकारों से जोड़ा जाता रहा है। यही वो शहर है जिसने कलाकार के सम्मान के साथ उसके परिवार के लिए फिक्रमंद होने का एक उदाहरण पेश किया है। सांस्कृतिक जन चेतना से जुड़ी संस्था त्रिकर्षि ने ऐसे परिवारों की मदद के लिए पहल की है। रंगकर्मी की बेजोड़ अभिनय की वजह से पहचाने जाने वाले सैयद रिजवान अली के इस दुनिया में नहीं होने पर उनकी बेटियों की पढ़ाई का जिम्मा उठाने का फैसला लिया है।

पढ़ाई रहे जारी

रिजवान अली का गत आठ फरवरी को हृदयघात से निधन हो गया था। वे अपने पीछे दो बेटियां तायबा और इमला को छोड़ गए हैं। जिसमें से बड़ी बेटी तायबा अभी तीसरी क्लास में और छोटी बेटी केजी–2 में पढ़ती है। त्रिकर्षि संस्था ने फैसला संस्था ने फैसला लिया कि श्री अली की बेटियों की पढ़ाई जारी रखने के लिए ग्रुप अपनी ओर से 23 मार्च को स्कूल शुरू होने से पहले 11 हजार रुपए प्रतिवर्ष स्कॉलरशिप प्रदान करेगा। बड़ी बेटी तायबा का सपना डॉक्टर बनना है।

'चंद्रशेखर' की मदद करेंगे

संस्था के निर्देशक केजी त्रिवेदी ने बताया, हम रवीन्द्र भवन सभागार में 23 मार्च को नाटक 'गगन दमामा बाज्यों' का मंचन करने जा रहे हैं। इस नाटक के मप्र सहित अन्य प्रदेशों में लगभग 40 मंचन हो चुके हैं। जिसमें हमेशा से चंद्रशेखर आजाद या भगवती चरण भाई का किरदार रिजवान ही निभाते रहे हैं। उनके बाद यह पहला मौका है जब इस नाटक का मंचन उनके बगैर किया जा रहा है। ऐसे में चंद्रशेखर का किरदार संतोष पाणिकर एवं भगवती चरण का किरदार अंशु निभाएंगे। उल्लेखनीय है कि 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान दिवस है। ऐसे में ग्रुप ने अपने मित्र को श्रद्धांजलि देते हुए उनकी बेटियों की 12वीं तक की पढ़ाई का जिम्मा उठाया है। अगले साल से यह राशि सीधे स्कूल में जमा करवाई जाएगी। इस स्कॉलरशिप के माध्यम से हम अपने दोस्त से यह वादा करते हैं कि 'दोस्त रिजवान आपकी बेटियां जरूर पढ़ेंगी....'।

रंगकर्म को बचाने की जद्दोजहद

रंगकर्म से जुड़ी संस्थाएं बहुत अच्छी आर्थिक स्थिति में नहीं होती हैं। ऐसे में रंगकर्म को बचाने की जद्दोजहद में लगी संस्थाएं अपने फर्ज को निभाने में भी आगे हैं। भारत भवन में होने वाले नाटकों के मंचन के लिए संस्था को लगभग 10 हजार रुपए किराया देना होता है। इसके साथ ही रंगकर्मियों, सेट डिजाइन, परिधान, मेकअप और प्रॉपर्टी के लिए भी अलग से बजट तैयार किया जाता है। एक अनुमान के मुताबिक एक नाटक के मंचन से कम से कम 25 से 30 हजार रुपए का खर्च होता है। वहीं नाटक के एक शो से लगभग 9 हजार रुपए सहयोग राशि एकत्र होती है। जो किसी भी तरह फायदे का सौदा नहीं है। ऐसे में कई बार नाटक के निर्माता निर्देशक को अपनी ओर से खर्च वहन करना होता है।

बनाएंगे फंड : संस्था ने तय किया है कि दिवंगत रंगकर्मियों के जरूरतमंद परिवारों की मदद के लिए एक पृथक फंड बनाया जाएगा। जिसमें संस्था के निर्देशक सहित सभी सदस्य अपनी स्वेच्छा से राशि एकत्र करेंगे। इस फंड से ही हर साल स्कॉलरशिप दी जाएगी।

दैनिक भास्कर में ऐसा छपा

आप अपनी सदस्यता के बारे में स्वयं जान सकते हैं। आपके पते में सबसे उपर एक संख्या लिखी है। उसकी पहली संख्या सदस्यता क्रमांक है, दूसरी संख्या सदस्यता का माह और तीसरी संख्या सदस्यता का सन। उदाहरण के तौर पर यदि '148/07/08–10' लिखा है तो अर्थ है कि सदस्यता कमांक 148 है। जुलाई माह में सदस्यता ली थी और सदस्यता का प्रारम्भ वर्ष 2008 था समाप्ति का वर्ष '2010' है। कई लोगों के पते में सौजन्य लिखा है, किसी में 'अनिवार्य'। सभी लोग उदारता का परिचय दें तो कृपा होगी।

प्रमोद वर्मा संस्थान का हुआ पुनर्गठन

रायपुर । राज्य की साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा को अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के संस्थान को पुनर्गठित करते हुए उसे राज्य भर में विस्तारित किया जा रहा है। पुनर्गठित समिति में श्री विश्वरंजन को फिर से अध्यक्ष और डॉ. सुशील त्रिवेदी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुना गया है। इसी तरह अलावा डॉ. सुधीर सक्सेना, डॉ. बलदेव, अनिल विभाकर, श्री अशोक सिंघई रवि श्रीवास्तव, एच. एस. ठाकुर को उपाध्यक्ष बनाया गया है । मुमताज, डॉ. सुधीर शर्मा व विनोद मिश्र को महासचिव, सुरेंद्र वर्मा सचिव, राजेश सोंथालिया को कोषाध्यक्ष, श्री नासिर अहमद सिंकदर, बी. एल. पाल, श्री कमलेश्वर साहू, जी. एस. अहलूवालिया, संजीव ठाकुर को संगठन सचिव, डॉ. जे. आर. सोनी व दीपांशु पाल को संयुक्त सचिव, राम पटवा कार्यालय सचिव, तपेश जैन व नगेंद्र दुबे प्रचार सचिव व जयप्रकाश मानस को पूर्व की तरह कार्यकारी निदेशक बनाया गया है । इसके अलावा नंदकिशोर तिवारी, रमेश अनुपम, डॉ. चित्तरंजन कर, डॉ. वंदना केंगरानी, सुरेश पंडा, डॉ. चेतन भारती, सुशील अग्रवाल, रीना अधिकारी, प्रभा सरस, विद्या गुप्ता, अरुणा चौहान, आर. के. सिंह, अरुणा चौहान, संदीप शर्मा आदि सदस्य बनाये गये हैं ।

राष्ट्रीय आयोजन

प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान इस वर्ष राज्य भर में कई महत्वपूर्ण और राष्ट्रीय आयोजन करेगा । जिसमें फैज अहमद फैज, केदार नाथ अग्रवाल, नेपाली की जन्म शताब्दी सहित विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150 जन्म वर्ष के अवसर पर क्रमशः भिलाई, कोरबा, रायगढ़ में राष्ट्रीय स्तर का आयोजन करेगा । विगत दिनों संस्थान की साधारण सभा और कार्यकारिणी की हुई बैठक में निर्णय लिया गया है कि 14–15 मई, 2011 को भिलाई में फैज और केदारनाथ अग्रवाल की जन्म–शताब्दी अवसर पर अंतरराष्ट्रीय आयोजन होगा जिसमें पाकिस्तान से फैज साहब की बेटी के अलावा कई पाकिस्तान और देश भर के वरिष्ठ बुद्धिजीवी भाग लेंगे । इस अवसर पर शायर मुमताज का गजल संग्रह, कथाकार विनोद मिश्र द्वारा संपादित छत्तीसगढ़ के कथाकारों का संकलन, कवि रवि श्रीवास्तव की कविता संग्रह, चित्रकार सुनीता वर्मा का रेखाचित्र संग्रह, जयप्रकाश मानस द्वारा संपादित कविता संग्रह विहंग, छतीसगढ़ के समकालीन हिन्दी कवियों का कविता संग्रह, आलोचनात्मक कृति साहित्य की सदाशयता, विश्वरंजन द्वारा संपादित फैज और केदारनाथ अग्रवाल एकाग्र, मधुरेश तथा श्रीभगवान सिंह पर केंदित दो एकाग्र डॉ. बलदेव द्वारा संपादित छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह आदि सहित पत्रिका पाण्डुलिपि के चौंथे अंक विमोचन भी होगा । बैठक में यह भी निर्णय लिया गया है कि छत्तीसगढ़ी भाषा के विद्वान लेखक दयाशंकर शुक्ल की कृति का पुनर्प्रकाशन भी किया जायेगा ।

अनाथ बच्चों के हॉस्टल निर्माण के लिए राहत फतेह अली का चौरिटी शो

संस्थान द्वारा से अक्टूबर माह में सामाजिक भूमिका के तहत गरीब, अनाथ, नक्सली हिंसा में मारे गये पिता के आश्रित बच्चों (कुल 50 विद्यार्थियों) की उच्च शिक्षा और सांस्कृतिक उन्नयन के लिए रायपुर में एक होस्टल निर्माण में के लिए चौरिटी शो का आयोजन किया जायेगा जिसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित गायक राहत फतेह अली (पाकिस्तान), सुप्रसिद्ध शायर जावेद अख्तर(मुंबई), छोटे उस्ताद जयंत सिंह (पूना) जैसे कलाकारों द्वारा सांगीतिक प्रस्तुति दी जायेगी । इसके अलावा राज्य भर के रचनाकारों के रायपुर प्रवास पर रात्रि विश्राम सहित साहित्यिक गतिविधियों के संचालन के लिए प्रमोद वर्मा स्मृति हिन्दी भवन भी बनाया जायेगा ।

बैठक के अंत में देश के ख्यात आलोचक, प्रगतिशील वसुधा के संपादक व शिक्षाविद् डॉ. कमला प्रसाद को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

रायपुर से राम पटवा की रपट ई–मेल से प्राप्त

अज्ञेय की कहानियों का नाट्य मंचन

दिल्ली। हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में अज्ञेय जन्मशती के अवसर पर उनकी दो कहानियों 'शरणदाता' और 'गैंग्रीन' का नाट्य मंचन दिल्ली के श्रीराम सेंटर में किया। इन कहानियों का नाट्य रूपांतर प्रो0 देवेन्द्र राज अकुंर द्वारा किया गया और उन्हीं के निर्देशन में नाट्य मंचन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी

आप अपने समाचार हमें ई–मेल के जरिये भी भेज सकते हैं। समाचार, सूचना अथवा प्रतिक्रिया के लिए यूनीकोड फॉन्ट्स का इस्तेमाल करें अथवा अपने पास उपलब्ध फॉन्ट में टाइप करके यूनीकोड में बदलने के लिए हमारी वेबसाइट www.dharohar.net पर उपलब्ध कनवर्टर का उपयोग करें। इससे आपका समचार हमें तत्काल मिल जायेगा।

अकादमी के सचिव प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' ने कहा कि अज्ञेय हिन्दी साहित्य उन लेखकों में रहे हैं जिन्होंने साहित्य को नई दिशा दी है।

अज्ञेय की कहानियां 'शरणदाता' और 'गैंग्रीन' उनके जीवन की दो अलग–अलग विशेषताओं को उजागर करती हैं। 'शरणदाता' जहां भारत विभाजन जैसी त्रासदी की पृष्ठभूमि में से उभरकर आती है, वहीं 'गैंग्रीन' हमारे वैयक्तिक जीवन में पसर गयी सम्बन्धों की एकरसता, संवादहीनता और अवसाद को रेखांकित करती है।

डॉ. चन्द्र सैन ने ई–मेल भेजा

नागरी लिपि संगोष्ठी का आयोजन

शिलांग। नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली एवं पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय नागरी लिपि संगोष्ठी का आयोजन मेघालय राज्य के अतिरिक्त आरक्षी महानिदेशक श्री अतुल कुमार माथुर की अध्यक्षता में 13 मार्च 2011 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, लोअर लचुमेयर में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सीमा सुरक्षा बल के पूर्व महानिरीक्षक श्री रमेशचन्द्र सक्सेना, विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्व श्री जे. वी. सिंह, कमाण्डिंग ऑफिसर, शिलांग छावनी, गौतम कुमार, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम, प्रो. स्ट्रीमलेट डखार, अध्यक्ष खासी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, समाजसेवी श्री ओमप्रकाश अग्रवाल उपस्थित थे।

संगोष्ठी की शुरुआत श्रीमती उषा भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत भजन से हुई। डॉ. अवनीन्द्र कुमार सिंह ने अपने आलेख में नागरी लिपि की उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। जवाहर नवोदय विद्यालय मोखला, जयन्तीया हिल्स के हिंदी–शिक्षक श्री संतोष कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किया। इनके अतिरिक्त अन्य विद्वानों में श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, गौतम कुमार, जे. वी. सिंह, प्रो. विद्याशंकर शुक्ल, प्रो. हरिशंकर, प्रो. अशोक मिश्र ने भी अपने–अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में हास्य कविता–पाठ किया गया। सर्वश्री रामकुमार वर्मा, तन्जीम अहमद, पुष्पलता राठौर, सपन भवाल, डॉ. ए. के. सिंह, कैप्टेन दिनेशा भारद्वाज सिंह, रामविनोद यादव, संगीता शर्मा, उषा भारद्वाज, दीक्षा जैन, बिमल कुमार बजाज, मञ्जु लामा, देवेन्द्र कुमार मिश्र, प्रो. स्ट्रीमलेट डखार आदि ने अपनी स्वरचित कविताओं का पठा किया। मुख्य अतिथि श्री रमेश चन्द्र सक्सेना ने अपनी कविताओं से खूब हँसाया। इन दोनों सत्रों का सफल संचालन डॉ. अकेलाभाइ ने किया।

रमेश दवे 'पूर्वग्रह' के सम्पादक

भोपाल। भारत भवन की न्यासी मंडल ने प्रख्यात साहित्यकार एवं समालोचक, शिक्षाविद् प्रो. रमेश दवे को भारत भवन की त्रैमासिक पत्रिका 'पूर्वग्रह' का सम्पादक नियुक्त किया है।

प्रो. दवे पूर्व में शिक्षा विभाग की शैक्षणिक पत्रिका 'पलाश' का 14 वर्ष तक सम्पादन कर चुके हैं। शिक्षक–प्रशिक्षण और आनंददायी शिक्षण से संबंधित आठ पुस्तकों का भी आपने संपादन किया है। प्रो. दवे वर्तमान में साहित्यिक पत्रिका 'समावर्तन' के संपादक मंडल, म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पंडित रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास के अध्यक्ष हैं। साहित्यालोचना की पांच पुस्तकों के अलावा आपका एक कविता संग्रह और एक कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। प्रो. दवे मप्र हिन्दी साहित्य अकादमी के नंददुलारे वाजपेयी समिति, इंदौर के शताब्दी सृजन सम्मान और अभिनव कला परिषद के मालव रत्न सम्मान से विभूषित हो चुके हैं।

अशोक ठाकुर को पीएच.डी.

बड़वानी। देवी अहित्या विश्वविद्यालय, इंदौर से हिन्दी साहित्य में 'प्रेमशंकर रघुवंशी के नवगीतों में आधुनिकता एवं लोक की अन्तः क्रिया' विषय पर अशोक ठाकुर, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शासकीय महाविद्यालय, राजेपुर (बड़वानी) को पीएच.डी. की उपाधि मिली। डॉ. श्रीराम परिहार प्राचार्य, माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खण्डवा के निर्देशन में उन्होंने शोध–कार्य किया। वे पिछले दस वर्षों से राजेपुर महाविद्यालय में सेवारत हैं।

अकादेमी का साहित्योत्सव

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी 'अकादेमी 2010' के उद्घाटन के साथ अकादेमी के छह दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ कथाकार चित्रा मुद्गल ने किया। अकादेमी के उपाध्यक्ष सुतिंदर सिंह नूर के आकस्मित निधन के कारण यह कार्यक्रम बेहद सादगी के साथ आयोजित किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में चित्रा मुद्गल ने कहा कि जनसाहित्य को संरक्षित और रेखांकित करने के काम को साहित्य अकादेमी बखूबी निभा रही है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अकादेमी पहले से और ज्यादा सक्रिय हुई है। वार्षिक प्रदर्शनी में अकादेमी की ओर से देश के कई भागों में आयोजित समारोहों, संगोष्ठियों और दूसरे तमाम कार्यक्रमों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

'स्याही से लिखी जाती नहीं' का लोकार्पण

प्रेम के बिना जीवन अधूरा है : सोम ठाकुर

बांये से : सर्वश्री मोहन शर्मा, सोम ठाकुर, मनोहर वर्मा एवं विनोद रायसरा

भोपाल। ''प्रेम शाश्वत है। प्रेम के बिना जीवन अधूरा है। प्रेम जीवन में सरसता भर देता है। और प्रेम के गीत गाने वाला कबीर और मीरा बनकर युगों–युगों तक मानस में रमा रहता है। विनोद रायसरा के गीत भी मानस के गीत बन सकेंगे।''–ये उद्‌गार श्री विनोद रायसरा की पुस्तक 'स्याही से लिखी जाती नहीं' के लोकार्पण समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में उपस्थित विख्यात गीतकार श्री सोम ठाकुर ने व्यक्त किये। दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता साहित्यकार श्री मनोहर वर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में नरसिंहगढ़ के विधायक श्री मोहन शर्मा उपस्थिति थे।

श्री सोम ठाकुर ने उद्‌बोधन के बाद श्रोताओं के विशेष आग्रह पर एक गीत भी सुनाया–'तन हुए शहर के, लेकिन मन जंगल के हुए'। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित श्री मोहन शर्मा ने कहा कि साहित्य संस्कार देता है। आज राजनीति को संस्कार की ज़रूरत है और वो संस्कार बौद्धिक समाज से ही मिलेगा।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री मनोहर वर्मा ने कहा कि आज के समय में साहित्य और साहित्यकार पर कई तरह के दबाव हैं। ऐसे में कविता को बचाये रखना बहुत ज़रूरी है। श्री रायसरा की कविताएँ अपने समय को बचाकर रखने का जतन करती हैं।

कविता संग्रह के लोकार्पण के बाद रचनाकार श्री विनोद रायसरा ने अपनी रचना प्रक्रिया पर वक्तव्य देते हुए कहा कि इन रचनाओं में मेरा अनुभव समाहित है। इस अवसर पर उन्होंने कुछ रचनाओं का पाठ भी किया। संग्रह का शीर्षक गीत 'स्याही से लिखी जाती नहीं' का अंश 'आँसू से सने गीत हवाओं में बहेंगे, रहे प्यार अमर गीत ज़माने से कहेंगे, आँसू के बिना प्यार की कुटिया नहीं छानी, स्याही से लिखी जाती नहीं प्रेम कहानी' को श्रोताओं ने बेहद सराहा।

इस अवसर पर संग्रहालय की ओर से श्री रायसरा का अभिनन्दन भी किया गया।

देहावसान साहित्य–जगत की विनम्र श्रृद्धांजलि

तेलुगु फिल्मों के पटकथा लेखक रमन्ना का निधन

हैदराबाद। तेलुगु फिल्मों के मशहूर पटकथा लेखक मुलापुडी वेंकट रमन्ना का 80 वर्ष की उम्र में चेन्नई के उनके आवास पर निधन हो गया। रमन्ना का वास्तविक नाम वेंकट राव था। वे अपनी भावुकता से भरी हास्य–लेखन शैली के लिए जाने जाते थे। मशहूर फिल्म निर्देशक बापू के साथ उनकी जोड़ी ने कई सफल फिल्में दीं और कई पुरस्कार भी जीते।

श्री रमेश हठीला

सीहोर। कवि तथा साहित्यकार रमेश हठीला का लम्बी बीमारी के बाद हैदराबाद के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। 'बंजारे गीत' पुस्तक के माध्यम से राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य पर अपनी पहचान छोड़ने वाले श्री हठीला इकसठ वर्ष के थे। देशभर के कवि–सम्मेलनों में अपने ओज के गीतों से अपनी अलग पहचान स्थापित करने वाले गीतकार तथा सीहोर की साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु रहने वाले श्री रमेश हठीला का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

मई 2011 में यह पत्रिका चौदहवें वर्ष में प्रवेश करेगी। तेरह वर्षो में पत्रिका ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, तथापि काफी कुछ नवाचार किये जा सकते हैं, लेकिन आपका मार्गदर्शन, सलाह और सहयोग बहुत ज़रूरी है। पत्रिका के सन्दर्भ में अपने विचार हमें 5 अप्रैल 2011 तक ज़रूर लिख भेजिये, ताकि मई 2011 के अंक में उनका प्रकाशन किया जा सके। सम्पादक

आप अपनी सदस्यता के बारे में स्वयं जान सकते हैं। आपके पते में सबसे उपर एक संख्या लिखी है। उसकी पहली संख्या सदस्यता क्रमांक है, दूसरी संख्या सदस्यता का माह और तीसरी संख्या सदस्यता का सन। उदाहरण के तौर पर यदि '148/07/08–10' लिखा है तो अर्थ है कि सदस्यता कमांक 148 है। जुलाई माह में सदस्यता ली थी और सदस्यता का प्रारम्भ वर्ष 2008 था समाप्ति का वर्ष '2010' है। कई लोगों के पते में सौजन्य लिखा है, किसी में 'अनिवार्य'। सभी लोग उदारता का परिचय दें तो कृपा होगी।

शब्दशिल्पियों के आसपास

रचनाधर्मियों की मासिक सम्वाद–पत्रिका

'शब्दशिल्पियों के आसपास' का शुल्क वर्तमान में बहुत कम है। इसके विज्ञापन की दरें भी न्यूनतम हैं। इसे अधिक समय तक इतना ही नहीं रख सकेंगे।

सहयोग राशि

वार्षिक	:	60 रुपये
त्रिवार्षिक	:	150 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

विज्ञापन सहयोग

रंगीन एक पृष्ठ	: 25,000 – 00 रुपये
एक रंग एक पृष्ठ	: 15000 – 00 रुपये

लेखकों एवं साहित्यिक संस्थाओं के लिए 90 प्रतिशत छूट। रियायत में रंगीन एक पृष्ठ से कम का विज्ञापन स्वीकार नहीं होगा। राशि अग्रिम रूप से भेजना होगा। राशि 'शब्दशिल्पियों के आसपास' के नाम से ही भेजें।

नवीनतम समाचारों के लिए देखें

www.dharohar.net

अपने समाचार, सूचनाएँ और प्रतिक्रियाएँ हमें ई–मेल के जरिये भी भेज सकते हैं।
e-mail : shabdashilpi@yahoo.com

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय

एफ–50/17, दक्षिण तात्या टोपे नगर,
शरद जोशी मार्ग, भोपाल–462003
दूरवार्ता : 0755–2775129, 9425007710, 9713818129, 9479377110